Lesson 26

June 9, 2023

प्रारम्भरचनानुवाद कौमुदी द्वितीय पाठः

ॐ सह नाववतु ।
सह नौ भुनक्तु ।
सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

Om Saha Nau-Avatu |
Saha Nau Bhunaktu |
Saha Viiryam Karavaavahai |
Tejasvi Nau-Adhiitam-Astu Maa Vidvissaavahai |
Om Shaantih Shaantih Shaantih ||
Meaning:

1: Om, May God Protect us Both (the Teacher and the Student),
2: May God Nourish us Both,
3: May we Work Together with Energy and Vigour,
4: May our Study be Enlightening and not give rise to Hostility,
5: Om, Peace, Peace, Peace.

SUBSCRIBE
|| Spiritual Mantra ||

पठामि संस्कृतं नित्यं वदामि संस्कृतं सदा ध्यायामि संस्कृतं सम्यक् वन्दे संस्कृतमातरम्

Om Ayim Sriim Hriim Saraswati Devyai Namaha

ओम ऐम् श्रीम् ह्रीम् सरस्वती देव्यै नमः

What are the benefits of chanting Saraswati mantra?

a. Doing regular chanting of Saraswati mantra improves your speech, memory and concentration in study.
b. She removes your ignorance and refines your character by giving you good qualities like humility and culture.
c. Saraswati Mantra gives you control over your speech, knowledge and wisdom.
d. By chanting this mantra of saraswati maa with dedication, a student can pass his exam with good marks.
e. Chanting Saraswati Mantra helps poets, writers and folk speakers to reach new heights of achievements.
f. Close your eyes in contemplation and rub your hands together and then open your palms and say the karagre vasatir Lakshmi prayer

https://youtu.be/YuKtKR3r0oM

शब्दकोषः २० + २० = ४०

अभ्यासः (क)

१। त्वं (तू)]

२। युवां (तुम दोनों)]------ सर्व नाम शब्दः

३। यूयम् (तुम सब)]

४। गृहम् (घर)

५। ज्ञानम् (ज्ञान)

६। पुस्तकम् (पुस्तक)

७। पुष्पम्

८। जलम् (जल)

९। सत्यम् (सत्य)

१०। भोजनम् (भोजन)

११। राज्यम् (राज्य)

ख। धातुः

१। रक्ष् (रक्षा करना)

२। वद् (बोलना)

३। पच् (पकाना)

४। नम् (नमस्कार करना)

विभक्ति		कारक	(कारक-चिह्न)
(१) प्रथमा	(प्र०)	कर्ता	—, ने
(२) द्वितीया	(द्वि०)	कर्म	को
(३) तृतीया	(तृ०)	करण	ने, से, द्वारा
(४) चतुर्थी	(च०)	संप्रदान	के लिए
(५) पंचमी	(पं०)	अपादान	से
(६) षष्ठी	(ष०)	सम्बन्ध	का, के, की
(७) सप्तमी	(स०)	अधिकरण	में, पर
(८) सम्बोधन	(सं०)	संबोधन	हे, अये, भोः

(ग) अव्यय

१। अद्य (आज)

२। इदानीम् (अब)

३। यद (जब)

४। तदा (तब)

५। कदा (कब)

गृह कार्यम्

१। (क) गृह — राज्य (गृह वत विभक्ति के रूप याद करो)

२। (ख) रक्ष् — नम् (भवतिवत्त धातु रुप स्मरण् करो)

- Write all the vibhakti forms of all the nouns.
- Write present tense forms of all the verbs

गृह शब्दरूपाणि

(नपुंसकलिङ्गम्)

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	गृहम्	गृहे	गृहाणि
सम्बोधन	गृह	गृहे	गृहाणि
द्वितीया	गृहम्	गृहे	गृहाणि
तृतीया	गृहेण	गृहाभ्याम्	गृहैः
चतुर्थी	गृहाय	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
पञ्चमी	गृहात् / गृहाद्	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
षष्ठी	गृहस्य	गृहयोः	गृहाणाम्
सप्तमी	गृहे	गृहयोः	गृहेषु

रक्ष् धातुरूपाणि

रक्षँ पालने - भ्वादिः - कर्तरि प्रयोगः परस्मै पदम्

रक्ष् तुलना अभ्यासाः

लट् लकारः

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति
मध्यम पुरुषः	रक्षसि	रक्षथः	रक्षथ
उत्तम पुरुषः	रक्षामि	रक्षावः	रक्षामः

रक्ष् धातुरूपाणि - रक्षँ पालने - भ्वादिः - कर्मणि प्रयोगः आत्मने पदम्

रक्ष् तुलना अभ्यासाः

लट् लकारः

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	रक्ष्यते	रक्ष्येते	रक्ष्यन्ते
मध्यम पुरुषः	रक्ष्यसे	रक्ष्येथे	रक्ष्यध्वे
उत्तम पुरुषः	रक्ष्ये	रक्ष्यावहे	रक्ष्यामहे

व्याकरण (लट्, मध्यमपुरुष)

१. गृह शब्द के प्रथमा, द्वितीया के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द-संख्या २६)। शब्द के अन्त में प्रथमा और द्वितीया में अम्, ए, आदि न लगेगा। गृह और पुष्प शब्द में आनि के स्थान पर आणि लगेगा।

२. मध्यमपुरुष में धातु के अन्त में एकवचन में असि, द्विवचन में अथः और वहुवचन में अथ लगेगा। जैसे—पठसि, पठथः, पठथ। इसी प्रकार रक्ष् आदि धातुओं के रूप वनाओ। जैसे—रक्षसि, वदसि, पचसि, नमसि, गच्छसि, भवसि, हससि आदि।

३. संस्कृत में तीन वचन होते हैं—**एकवचन, द्विवचन, बहुवचन**। एक के लिए एकवचन (एक०), दो के लिए द्विवचन (द्वि०), तीन या अधिक के लिए बहुवचन (बहु०)।

४. तीन पुरुष होते हैं:—**प्रथम (या अन्य पुरुष** (प्र० पु०) अर्थात् वह, वे दोनों, वे सब, किसी व्यक्ति या वस्तु का नाम। (२) **मध्यमपुरुष** (म० पु०) अर्थात् तू, तुम दोनों, तुम सब। (३) **उत्तमपुरुष** (उ० पु०) अर्थात् मैं, हम दोनों, हम सब। ये नाम स्मरण कर लें।

नियम ४ - द्वितीय फाठः

नियम ४— (अपदं न प्रयुञ्जीत) बिना प्रत्यय लगाये किसी शब्द या धातु का प्रयोग न करें। (शब्द के अन्त में जुड़ने वाले अः, औ, आः आदि तथा धातु के अन्त में जुड़ने वाले अति, अतः, अन्ति आदि को प्रत्यय कहते हैं।) अन्त में बिना कुछ प्रत्यय लगाये गृह, पुस्तक, भोजन, पठ्, रक्ष् आदि का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। गृहम्, पुस्तकम्, पठति आदि का ही प्रयोग होगा।

उदाहरण वाक्य

लट्, मध्यमपुरुष

अभ्यास २

१. उदाहरण-वाक्य—१. तू पढ़ता है—त्वं पठसि। २. तुम दोनों पढ़ते हो—युवां पठथः। ३. तुम सब पढ़ते हो—यूयं पठथ। ४. त्वं पुस्तकं पठसि। ५. युवां राज्यं रक्षथः। ६. यूयं भोजनं पचथ। ७. त्वम् ईश्वरं नमसि। ८. युवां गृहं गच्छथः। ९. यूयं सत्यं वदथ। १०. त्वम् इदानीं किं पठसि ?

२। संस्कृत बनाओ

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. तू पढ़ता है। २. तू घर जाता है। ३. तू हँसता है। ४. तू राज्य की रक्षा करता है। ५. तू सत्य बोलता है। ६. तू क्या कहता है? ७. तू ईश्वर को नमस्कार करता है। ८. तू पुस्तक पढ़ता है। ९. तू कहाँ जाता है? १०. तू आज क्या पढ़ रहा है? ११. जब तू आता है, तब वह भोजन पकाता है। १२. तू अब पुस्तक पढ़ रहा है। (ख) १३. तुम दोनों कब पुस्तकें पढ़ते हो? १४. तुम दोनों सत्य बोलते हो। १५. तुम दोनों क्या कहते हो? १६. तुम दोनों राजा की रक्षा करते हो। (ग) १७. तुम सब विद्यालय को जाते हो। १८. तुम सब हँसते हो। १९. तुम सब कब पुस्तकें पढ़ते हो?

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) त्वं राजस्य रक्षसि ।	त्वं राज्यं रक्षसि ।	३
(२) गुवां पुस्तकं पठसि ।	युवां पुस्तकानि पठथः ।	१,४
(३) यूयं विद्यालयं गच्छथः ।	यूयं विद्यालयं गच्छथ ।	१
(४) यूयं हसन्ति ।	यूयं हसथ ।	१

४. शुद्ध करो तथा नियम बताओ—त्वं पठति । युवां पठथ । यूयं पठन्ति । यूयं वदसि । त्वं गच्छति । त्वं नृपस्य रक्षति । त्वं पठ् ।

अशुद्ध को शुद्ध बनाओ

त्वं पठति —--- त्वं पठसि (नियं १)

युवां पठथ —--- युवां पठथः (नियं १)

यूयं पठन्ति —-- यूयं पठथ (नियं १)

यूयं वदसि —--- यूयं वदथ (नियं १)

त्वं गच्छति —- त्वं गच्छसि (नियं १)

त्वं नृपस्य रक्षति —----- त्वं नृपं रक्षसि (नियं १, ३)

त्वं पठ् —---- त्वं पठसि

नियमाः

नियम १—कर्ता के अनुसार क्रिया का वचन और पुरुष होता है। जैसे, सः पठति। कर्ता प्रथमपुरुष एकवचन है, अतः क्रिया भी प्र० पु० एक० है।

नियम २—तीनों लिंगों में धातु का रूप वही रहता है।

नियम ३—कर्ता में प्रथमा होती है और कर्म में द्वितीया।

नियम ४ - द्वितीय फाठः

नियम ४— (अपदं न प्रयुञ्जीत) बिना प्रत्यय लगाये किसी शब्द या धातु का प्रयोग न करें। (शब्द के अन्त में जुड़ने वाले अः, औ, आः आदि तथा धातु के अन्त में जुड़ने वाले अति, अतः, अन्ति आदि को प्रत्यय कहते हैं।) अन्त में बिना कुछ प्रत्यय लगाये गृह, पुस्तक, भोजन, पठ्, रक्ष् आदि का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। गृहम्, पुस्तकम्, पठति आदि का ही प्रयोग होगा।

वाक्यानि परिवर्तनं करोतु, वाक्यं रचयतु च

५. अभ्यास (क) २ (क) के वाक्यों को द्विवचन और वहुवचन में वदलो।

(ख) भू, पठ्, गम्, हस्, रक्ष्, वद, पच्, नम् के लट् मध्यम पुरुप के रूप लिखो।

(ग) गृह, ज्ञान, पुस्तक, पुष्प, भोजन के प्रथमा और द्वितीया के रूप लिखो।

(घ) संस्कृत में कितने वचन और पुरुप होते हैं ? वताओ।

६. वाक्य वनाओ—पठसि, गच्छसि, पुस्तकम्, गृहम्, सत्यम्, अद्य।

सुभाषितम्

नरस्याभरणं रूपं रूपस्याभरणं गुणः।
गुण्स्याभरणं ज्ञानं ज्ञानस्याभारणं क्षमा।।

The ornament of a man is form, and the ornament of form is virtue.

Knowledge is the ornament of virtue and forgiveness is the ornament of knowledge.

CLOSING PEACE PRAYER